212
हिन्दी विभाग
MIRANDA HOUSE UNIVERSITY OF DELHI
स्वाध्यायान् प्रमदितव्यम्

साहित्योत्सव
मृदुला गर्ग
लेखक से मुलाकात

हिन्दी विभाग

1948 में कॉलेज की स्थापना के साथ ही हिन्दी विभाग का आरंभ हुआ। शुरुआत केवल दो अध्यापिकाओं के साथ हुई थी, डॉ. कमला सान्धी और श्रीमती शान्ति माथुर। पर कारवां बढ़ता गया और विभाग में डॉ. इंदुजा अवस्थी के साथ बाद के वर्षों में डॉ. शैल कुमारी का नाम जुड़ा।

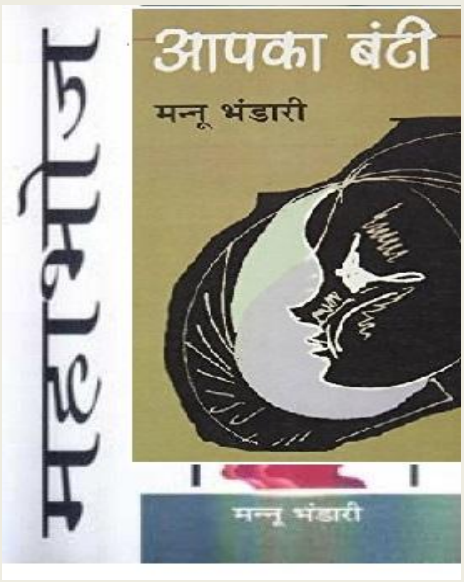

डॉ. मन्नू भंडारी मिरांडा हाउस के हिन्दी विभाग में एक नया अध्याय जोड़ती हैं। मन्नू जी ने ऐसी कई रचनाएँ लिखीं जो हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। उनमें 'आपका बंटी' सबसे खास रही। उनकी रचना 'महाभोज' सिविल परीक्षाओं के निर्धारित पाठ्यक्रम का हिस्सा बनता आया है।

हिन्दी साहित्य जगत में डॉ. अर्चना वर्मा कवि-कथाकार-आलोचक के रूप में प्रसिद्ध हैं। विमर्श के दौर में उनका 'अस्मिता-विमर्श का स्त्री स्वर' उल्लेखनीय है। अर्चना जी हंस और कथादेश जैसी पत्रिकाओं के संपादन में भी संलग्न रही हैं।

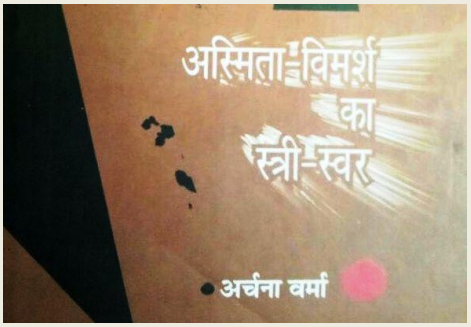

भारती परिषद

भारती परिषद विभाग की अहम संस्था है जिसे विद्यार्थी अपनी प्राध्यापिकाओं की सहायता से चलाते हैं। विभाग में साहित्यिक गतिविधियों को संचालित करने का काम इस संस्था ने विगत कई वर्षों से किया है। 'साहित्योत्सव', 'लेखक से मुलाकात' जैसे कार्यक्रम इस संस्था की साहित्यिक सक्रियता का परिचय देते हैं। छात्रों में रचनात्मक अभिवृत्ति के विकास के लिए विभागीय और विश्वविद्यालयीय दोनों स्तरों पर भारती परिषद ने स्वस्थ, प्रतियोगी और संवादी वातावरण का निर्माण किया है।

पाठ्यक्रम

रेगुलर और एड-ऑन दोनों तरह के कोर्स(पाठ्यक्रम) हिन्दी विभाग की तरफ से चलाये जा रहे हैं। रेगुलर में बी.ए.-ऑनर्स, बी.ए.-प्रोग्राम और फंक्शनल हिन्दी (प्रोफेशनल कोर्स) आते हैं। शिक्षण के साथ प्रशिक्षण एड-ऑन कोर्स में शामिल है। इस तरह के कोर्स की योजना हिन्दी विभाग का विश्वविद्यालयीय स्तर पर वैशिष्ट्य है।

छात्राओं की उपलब्धियाँ

Student profile programme/course-wise:

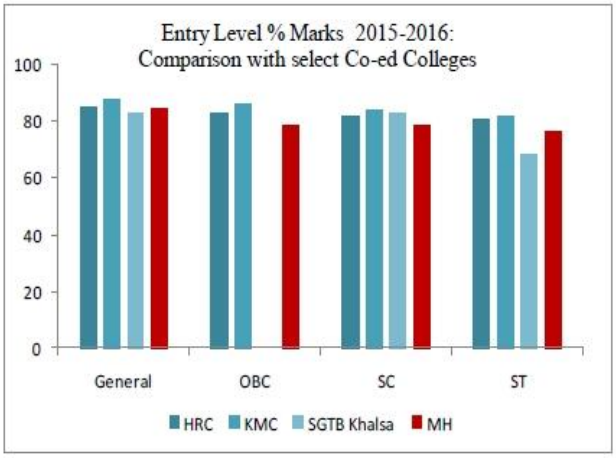

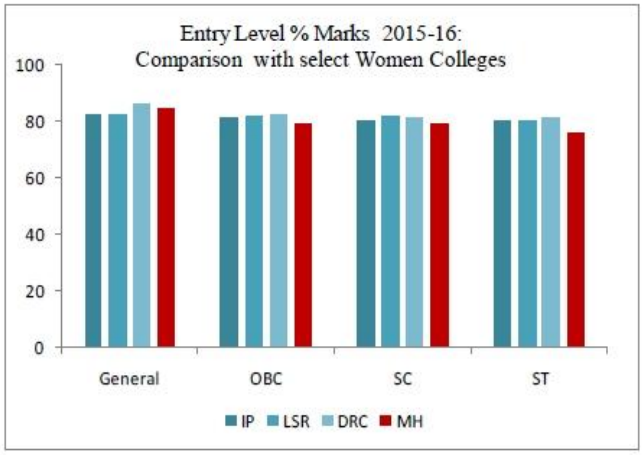

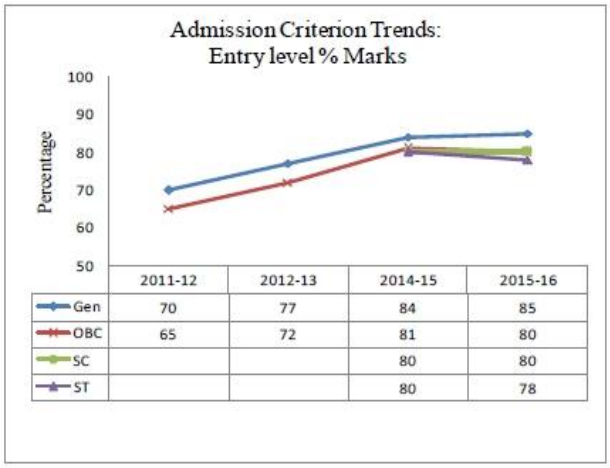

	2011-12	2012-13	2014-15	2015-16
Gen	70	77	84	85
OBC	65	72	81	80
SC			80	80
ST			80	78

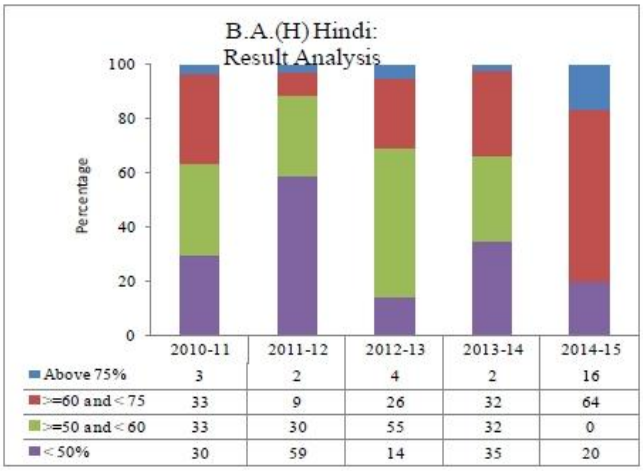

	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15
Above 75%	3	2	4	2	16
>=60 and < 75	33	9	26	32	64
>=50 and < 60	33	30	55	32	0
< 50%	30	59	14	35	20

Diversity of Students:

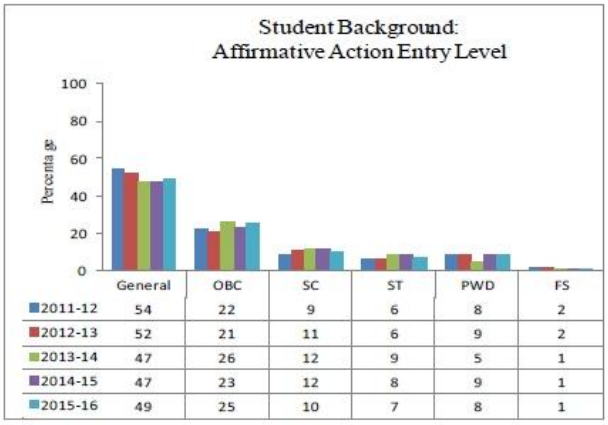

	General	OBC	SC	ST	PWD	FS
2011-12	54	22	9	6	8	2
2012-13	52	21	11	6	9	2
2013-14	47	26	12	9	5	1
2014-15	47	23	12	8	9	1
2015-16	49	25	10	7	8	1

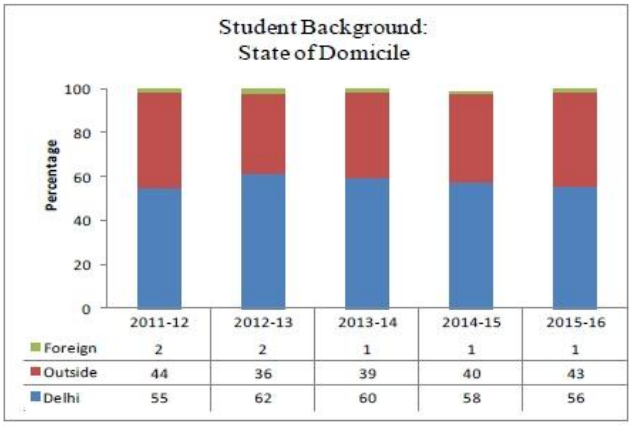

	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16
Foreign	2	2	1	1	1
Outside	44	36	39	40	43
Delhi	55	62	60	58	56

खेल-पदक

- उर्वशी, स्वर्ण पदक, वोलीबाल, दिल्ली स्टेट, २०१२-२०१३
- निधि यादव, कांस्य पदक, मिरांडा हाउस, स्पोर्ट्स फेस्ट, २०१३
- निधि यादव, कांस्य पदक, श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड आर्ट्स, स्पोर्ट्स फेस्ट, २०१३
- नेहा त्यागी, रजत पदक, अंतरमहाविद्यालयी ट्राईकैंडो चैंपियनशिप, २०१३
- नेहा त्यागी, रजत पदक, श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड आर्ट्स, स्पोर्ट्स फेस्ट, २०१३
- नेहा त्यागी, रजत पदक, मिरांडा हाउस, स्पोर्ट्स फेस्ट, २०१३
- निधि यादव, कांस्य पदक, मिरांडा हाउस, स्पोर्ट्स फेस्ट, २०१४
- निधि यादव, रजत पदक, डिस्ट्रिक लेवल, ट्राईकैंडो चैंपियनशिप, २०१४
- निधि यादव, रजत पदक, मिरांडा हाउस, स्पोर्ट्स फेस्ट, २०१५
- निधि यादव, स्वर्ण पदक, दूसरी ट्राईकैंडो चैंपियनशिप, २०१५
- निधि यादव, कांस्य पदक, चौथी ट्राईकैंडो चैंपियनशिप, २०१५
- निधि यादव, कांस्य पदक, अंतरमहाविद्यालयी ट्राईकैंडो चैंपियनशिप, २०१५
- चंचल को अंतरमहाविद्यालयी तीरंदाज़ी प्रतियोगिता में कांस्य और रजत पदक प्राप्त, २०१५
- चंचल को दिल्ली स्टेट, तीरंदाज़ प्रतितोगिता में रजत पदक प्राप्त, २०१५
- चंचल को, डॉ भरत राम ओपन स्पोर्ट्स मीट में स्वर्ण पदक, २०१५

2011 में स्वेतलाना ने बी.ए.-ऑनर्स, तीनों वर्षों में, विश्वविद्यालय में उच्चतम अंक प्राप्त किये।

2011 में सुप्रिया प्रणय ने महाविद्यालय का रजत जयंती पुरस्कार प्राप्त किया।

विगत वर्षों की तरह इस वर्ष विभाग की दो छात्राओं, रिचा मिश्रा और प्रियंका, ने दिल्ली विश्वविद्यालय की वाद-विवाद प्रतियोगिता का सर्वोच्च पुरस्कार 'चल-वैजयंती' जीता। इसी वर्ष, दो बार।

पहचान : विभागीय पत्रिका

पिछले कई सालों में विभागीय पत्रिका 'पहचान' ने विश्वविद्यालय के महाविद्यालय से निकलने वाली पत्रिकाओं में अपनी खासी पहचान बनायी है। डॉ. कविता भाटिया के कुशल संपादन में निकलने वाली यह पत्रिका पूर्णरूपेण हाथ से लिखे अक्षरों के साथ मुद्रित होती है जिसमें ज्यादातर विद्यार्थियों का मनोयोग शामिल होता है। इसमें सिर्फ साहित्यिक विषयों पर ही नहीं, अपने समय और समाज से जुड़े विषयों पर भी लेख आदि रचनात्मक सामग्रियाँ शामिल होती हैं। दूसरे महाविद्यालयों की रचनात्मकता को भी यहाँ मौका दिया जाता है।

विभागीय पुस्तकालय

महाविद्यालय के पुस्तकालय में पर्याप्त पुस्तकें हैं, साथ ही, विभाग का अपना पुस्तकालय भी है जहाँ ज्यादातर आधारभूत और पाठ्यक्रम को देखते हुए उपयोगी पुस्तकों को रखा गया है। विभागीय पुस्तकालय में किताबों की संख्या पाँच सौ अधिक है। दृष्टिबाधित छात्राओं के लिए ब्रेल लिपि में भी पुस्तकें उपलब्ध हैं। यहाँ से शिक्षक ही नहीं, छात्राएँ भी लाभान्वित होती हैं। इसकी देख-रेख विभाग की ओर से की जाती है।

वर्तमान विभाग

इस समय विभाग में स्थायी रूप से नियुक्त शिक्षिकाओं की संख्या 11 है। 3 शिक्षक एड-हॉक पर कार्यरत हैं। हिन्दी के आरंभिक और आधुनिक सभी रूपों को पढ़ाने में समर्थ यहाँ शिक्षकों की सक्रियताएँ हिन्दी के 'पब्लिक स्फीयर' में भी रही हैं। सभी शिक्षकों के अपने विशिष्ट अध्ययन क्षेत्र भी हैं। डॉ. उर्मिल सिंह की विशेषज्ञता 'आधुनिक कविता' और 'प्रसाद' में हैं। 'महाराष्ट्र के आधुनिक संत एवं उन पर लिखा गया साहित्य' इनका विशेष अध्ययन क्षेत्र है। डॉ. निशा नाग भाषा-विज्ञान की जानकार होने के साथ-साथ आधुनिक कविता तथा जनसंचार की विशेषज्ञ हैं। डॉ. रजनी दिसोदिया कथा-साहित्य, दलित विमर्श और स्त्री-विमर्श में हस्तक्षेप रखती हैं। डॉ. कविता भाटिया आधुनिक कविता की विशेषज्ञ हैं। स्त्री विमर्श भी इनकी विशेषज्ञता में शामिल है।

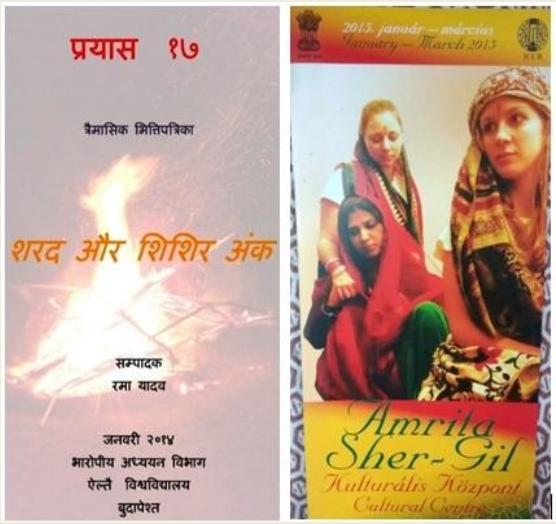

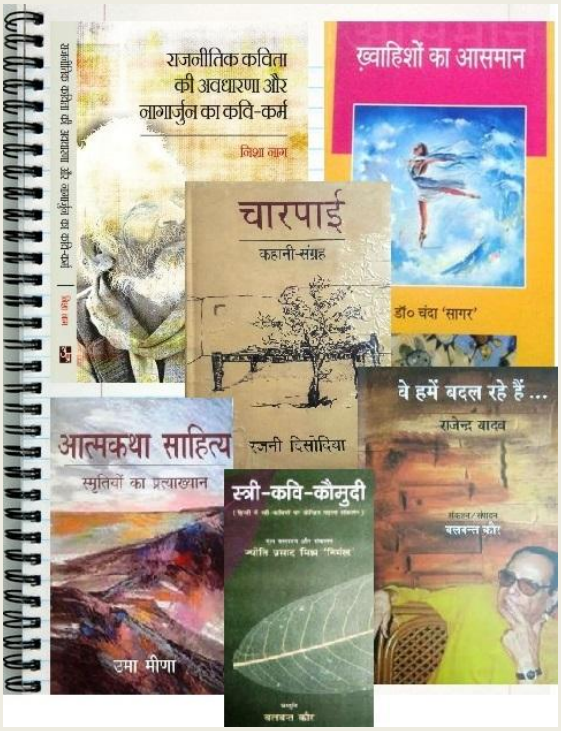

डॉ. रमा यादव रंगमंच और आधुनिक कविता की विशेषज्ञ हैं। आप आई.सी.सी.आर.-भारत सरकार की तरफ से 2013 से 2015 तक बुडापेस्त, हंगरी में हिन्दी चेयर पर रहीं। इस दौरान इन्होंने सांस्कृतिक गतिविधियों को भी संचालित किया। 2011 में, दिल्ली-सरकार की तरफ आयोजित 'तुगलक' नाटक में रंग-निर्देशक भानु भारती के साथ सह-निर्देशक की भूमिका में रहीं। हंगरी प्रवास में इन्होंने इन रंग-अनुभवों को निरंतरता दी। डॉ. बलवंत कौर की विशेषज्ञता हिन्दी और उर्दू कथा-साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन को लेकर है। आप प्रिंट मीडिया की जानकार हैं। डॉ. उमा मीणा आत्मकथा और दलित विमर्श की विशेषज्ञ हैं। डॉ. चंदा सागर कथा-साहित्य और दलित विमर्श पर विशेष जानकारी रखती हैं। डॉ. रेनू अरोड़ा आधुनिक रंगमंच की विशेषज्ञ हैं। रंग-कर्म से निरंतर जुड़ी हुई हैं। सुश्री अपराजिता

शर्मा साहित्येतिहास की विशेषज्ञ हैं। डॉ. संगीता राय की विशेषज्ञता जनसंचार और रंगमंच पर है। डॉ. अमरेन्द्र नाथ त्रिपाठी का काम आधुनिक कविता, लोक-साहित्य और आलोचनात्मक लेखन पर है। डॉ. प्रणव कुमार ठाकुर ने आदिवासी साहित्य पर काम किया है। श्री रमाशंकर सिंह का काम हिन्दी नवगीत पर है।

कॉलेज में हम

'अनुकृति' मिरांडा हाउस की नाट्य-संस्था है जिसमें दूसरे विभागों की तरह हिन्दी विभाग की भी शिरकत बराबर रही है। हिन्दी विभाग की शिक्षिकाओं ने इसमें अपना बहुमूल्य योगदान किया है जिसके लिए डॉ. इंदुजा अवस्थी, डॉ. शैल कुमारी, डॉ. अर्चना वर्मा, डॉ. रमा यादव

और डॉ. रेनू अरोड़ा की नाट्य-कर्म से जुड़ी सक्रियताएँ सराही जाती रही हैं। अभी हाल ही में मंचित बर्तोल्त ब्रेख्त का 'खड़िया का घेरा' लोगों द्वारा काफी पसंद किया गया।

महाविद्यालय की पत्रिका 'मिराण्डा' में अंग्रेजी और संस्कृत के साथ साथ एक खण्ड हिन्दी का भी रहता है। इसके लिए प्रतिवर्ष हिन्दी विभाग के सदस्य सहयोग करते हैं।

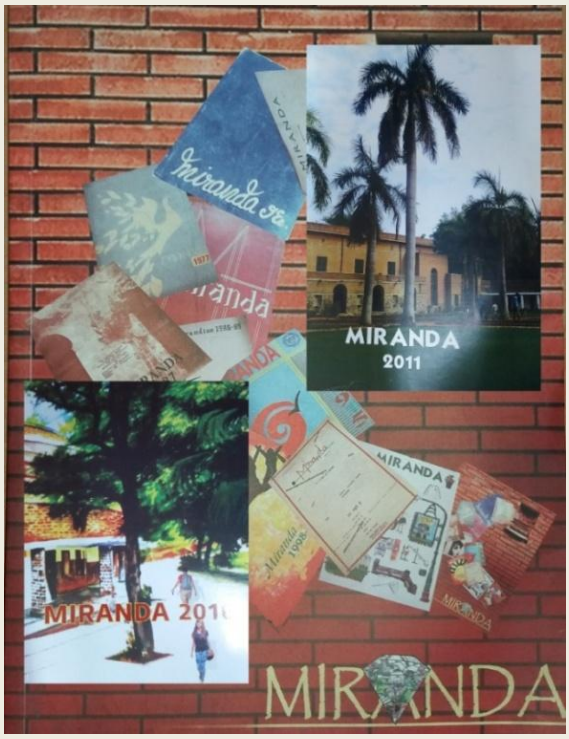

मीडिया में हिन्दी विभाग

फ़िल्म : हिन्दी विभाग की गौरव मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच है' पर 1974 में रजनीगंधा फिल्म बनी तो उस समय पूरे विश्वविद्यालय समेत हिन्दी समाज की निगाहें विभाग की ओर भी खिचीं। इसके तुरंत बाद उनकी कहानी 'स्वामी' पर स्वामी फिल्म भी बनी।

रेडियो : हिन्दी विभाग के कई शिक्षक रेडियो माध्यम के जरिये स्वयं को अभिव्यक्त करते रहे हैं। इनमें डॉ. निशा नाग, डॉ. रमा यादव, डॉ. रेनू अरोड़ा, डॉ. संगीता राय प्रमुख हैं। हाल ही में 'मिरांडा हाउस कम्युनिटी रेडियो' के उद्घाटन के बाद विभाग इस दिशा में पाठ्यक्रम परक सक्रियता भी रखेगा।

'हिमोजी' के बाद आएंगे भूले-बिसरे शब्द

दिल्ली के कॉलेज मिरांडा हाउस में हिंदी की शिक्षिका ने इस साल मार्च में हिंदी के चैट स्टीकर्स का पहला एप लांच किया। स्माइली यानी इमोजी को टक्कर देने वाले इस स्टीकर्स को उन्होंने हिमोजी का नाम दिया है। अपराजिता कहती हैं कि उन्होंने भारतीय संस्कृति, माहौल और भाषा के हिसाब से हिमोजी तैयार की है। यानी देसी भावनाओं को व्यक्त करने वाली देसी हिमोजी। अब तक इस एप के 40 हजार डाउनलोड हो चुके हैं। वह हिंदी के भूले-बिसरे शब्दों के स्टीकर बनाने पर भी काम कर रही हैं।

प्रिंट : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शिक्षकों के आलेख आते रहे हैं लेकिन यह अतिरिक्त खुशी का विषय है कि हिन्दी की दो ख्यातनाम और गंभीर पत्रिकाओं, 'हंस' और 'कथादेश', के संपादकीय सहयोग में भी विभाग की शिक्षिकाएँ जुड़ी रहीं। डॉ. अर्चना वर्मा 'हंस' से जुड़ी रहीं और वर्तमान में 'कथादेश' से जुड़ी हुई हैं। डॉ. बलवंत कौर वर्तमान में 'हंस' पत्रिका के संपादकीय सहयोग से जुड़ी हुई हैं।

न्यू मीडिया : न्यू मीडिया में सुश्री अपराजिता शर्मा का काम 'मील के पत्थर' सरीखा है। इन्होंने हिन्दी की सोशल मीडिया में चैट स्टीकर्स 'हिमोज़ी' का आविष्कार किया है। आपके इस काम की महत्ता को देखते हुए सुविख्यात पत्रिका 'फेमिना' ने विगत वर्ष की भारत की 101 सबसे सशक्त महिलाओं की सूची में आपको शामिल किया है। डॉ. अमरेन्द्र नाथ त्रिपाठी हिन्दी ब्लॉगिंग की दुनिया में कई वर्षो से सक्रिय हैं। सोशल मीडिया में अवधी भाषा को लेकर पहली वेबसाइट (awadh.org) 'अवधी कै अरघान' के संस्थापक-संपादक हैं।

चुनौतियाँ

हिन्दी विभाग में बड़ी संख्या में दृष्टिबाधित छात्राएँ आती हैं। उनका सामान्य छात्राओं के साथ सामंजस्य बने, उनके अध्ययन की सामग्री जुटे और उपलब्ध पाठ की रिकार्डिंग हो : यह विभाग के समक्ष चुनौती भरा काम रहा है। साहित्य के साथ-साथ जो नयी भाषा नीति आ रही है और समाज में बदलाव आ रहा है, उसको देखते हुए कैसे तालमेल बिठाया जाय, यह भी हमारा एक जरूरी लक्ष्य है।

योजनाएँ

चुनौतियों के समक्ष हमारी योजनाएँ इस तरह हैं : छात्रों में रचनात्मक और कलात्मक अभिव्यक्ति को ऊपर उठाने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन, रंगमंच से जुड़ी गतिविधियों से छात्राओं को जोड़ना और सालाना कार्यशालाओं को संभव करना, दृष्टिबाधित छात्राओं के लिए रिकार्डिंग्स, पठन-पाठन के आधुनिक तरीकों का समावेश और छात्राओं में विविध सामयिक विषयों पर शोध-परक दृष्टि का विकास।

लेखक
से
मुलाकात
हिन्दी विभाग
रेडियो सामुदायिक
केन्द्र का उद्घाटन
हिंदी विभाग, मिरांडा हाउस
27-28 जनवरी 2017
साहित्योत्सव
27 जनवरी 2017
28 जनवरी 2017